卐 ॐ अर्हम् 卐 ॥ ॐ श्री सौभाग्य गुरुदेवाय नमः ॥ 卐 जय श्रमण संघ 卐

सौभाग्य-तीर्थ

प्रेरणा एवं आशीर्वाद - सौभाग्यकुल दिवाकर, जिन शासन रत्नाकर, मालवा शिरोमणी, दीप स्तम्भ, मालव गौरव, संगठन शिरोमणि, मालव विभूषण, श्रमण संघीय पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. "निर्भय"

वर्ष-04 अंक-04 (मासिक)
सदस्यों के लिए
अप्रेल-2023

RNI No. MPHIN/2016/70554
Postal Regn. मालवा डिवीजन/357/2023-2025
Date of Posting 02 of every month

जय गुरु सौभाग्य
वंदन ! नमन ! अभिवादन!!!

मालव केसरी पूज्य गुरुदेव
श्री श्री १००८ श्री सौभाग्यमलजी म. सा.
की ११३वीं जन्म जयंति के पावन अवसर पर
हृदय की असीम आस्था के साथ
वंदन! नमन! अभिवादन!!

गुरु सौभाग्य वचनामृत

(45) सदा मुस्कराते रहो-तो यह दुनियाँ साथ देगी। रोओगे तो अकेला छोड़ देगी।

113वीं दीक्षा जयंति : जय गुरु सौभाग्य
दि. 9 अप्रेल रविवार 2023

शासन प्रभावक, श्रमणसंघ के मूर्धन्य सूत्रधार-संघ समर्पण-एकता संगठन के संधारक तथा संवाहक-शातिदूत दक्षिण भारतोद्धारक-मालव केसरी, महाराष्ट्र विभूषण-जैन सुधाकर-धर्म दिवाकर, प्रसिद्ध वक्ता, भक्तों के भगवान स्वरूप-सदा ही आशीर्वाद बरसाने वाले, सौभाग्य जगाने वाले-परिवार संघ व समाज में प्रेम की रसधार बहाने वाले-सर्वपूज्य-सर्ववंदनीय प्रातः स्मरणीय-महामहिम भक्त वत्सल पूज्य गुरुदेव

श्री श्री १००८ श्री सौभाग्यमलजी म. सा.

की ११३वीं जन्म जयंति के पावन अवसर पर
हृदय की असीम आस्था के साथ
वंदन! नमन! अभिवादन!!

******

संपा.-रवि जैन एवं समस्त गुरुभक्त परिवार

चलो, चले रतलाम चले : गुरु सौभाग्य के धाम चले
मासिक नवमी जाप चले : गुरु का आशीर्वाद फले

दि. 14 अप्रेल-शुक्रवार 2023 दि. 13 मई-शनिवार 2023	जाप का समय प्रातः 8:00 से 9:00

स्थान : श्री सौभाग्य तीर्थ - सागोद रोड़, रतलाम (म.प्र.)

सौभाग्य देशना : उपकार का अमृत

- मालव केसरी, पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमलजी म. सा.

धर्मराज युधिष्ठिर ने एक महीने तक खूब दान-पुण्य किया। जिसने जो भी माँगा वह उसे मिला ऐसी बात सुनकर बहुत दूर से एक दरिद्र ब्राह्मण धर्मराज के पास आया और उनसे याचना करने लगा।

धर्मराज बोले-भाई ! तुम देर से आए और अब दानशाला भी बन्द हो गई। अब तुम कल प्रातःकाल आना। तुम जो भी चाहोगे वह मिलेगा।

ब्राह्मण धर्मराज से आश्वासान पाकर खुश हो गया। जब वह बाहर आया तब सामने से भीम आ गए। भीम को देखकर उस ब्राह्मण ने प्रणाम किया। भीम ने ब्राह्मण से अपने आने का प्रयोजन पूछा और सभी बातें सुनकर उसे अपने साथ वापस महल में लाए। जहाँ बड़े-बड़े विजय नगाड़े बजाने लगे। प्राचीन समय में नगरजनों को युद्ध विजय की जानकारी देने के लिए नगाड़े बजाए जाते थे। नगाड़े की आवाज सुनकर धर्मराज स्वयं और अर्जुन आदि भाई तथा अन्य लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई। सभी के मन में उत्सुकता थी कि आज किस विजय की बात पर नगाड़े बजाये जा रहे हैं।

भीम बोले- सुनो भाईयों ! आज एक बहुत ही खुशखबर सुनाई जाती है। ऋषि-मुनियों-ज्ञानियों-योगीजनों को भी काल का पता नहीं चलता परन्तु हमारे महाराज धर्मराज को कालदर्शन हुआ है। इसीलिए उन्होंने एक ब्राह्मण को आज दान न देकर प्रातःकाल राज्यसभा में बुलाया है।

भीम की भीम की गर्जना सुनकर धर्मराज एकदम घबरा गए और बोले-'अरे भीम! मेरी फजीहत मत कर। मैं अभी इस वक्त ब्राह्मण को दान देता हूँ।'

भीम खुश हो गया और ब्राह्मण की इच्छा पूरी हो गई।

दशवैकालिक सूत्र में कहा है-

जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढई।
जाविन्दिया न हायन्ति, ताव धम्मं समायरे।। 8/36

जब तक वद्धावस्था पीड़ित न करें, व्याधियाँ शरीर को न घेरे, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं हो तब तक धर्म का आचरण कर लो।

जब तक शरीर में शक्ति है तब तक दूसरों का भला कर लो। रोग शरीर में कब प्रवेश कर जाए और इन्द्रियाँ कब शिथिल हो जाएँ-इसका पता नहीं है। जब तक अनन्त पुण्य का उदय है तब तक सभी रोगादि दबे रहेंगे अन्यथा दुनिया की हालत देख ही रहे हो।

ग्रीष्मऋतु का समय था। भरी दोपहर में एक गाँव में मुनिराज पधारे। लोगों ने मुनिराज को एक मकान में ठहराया। दूर से विहार करके आए थे। प्यास से पीड़ित भी थे। मुनिराज पात्र लेकर धोवण पानी की गवेषणा के लिए निकले। वे एक सेठ के घर जा पहुँचे। सेठ की पुत्रवधु ने मुनिराज की मुखकान्ति को देखकर पूछा-

इतनी शीघ्रता किसलिए ?

मुनिराज विचक्षण ज्ञानी थे। बहू के प्रश्न का रहस्य समझ गए। उन्होंने भी उसी रूप में उत्तर दिया-जैसा समय।

क्रमशः अगले अंक में

अक्षय, अक्षय तृतीया : भगवान ऋषभदेव

– प्रवर्तक मुनि प्रकाशचंद्र "निर्भय"

तिथियों का आवागमन अविराम गति से चलता रहता है। वे सामान्यतः अपने आपमें इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती है।

जब कोई तिथि किसी महान आत्मा से जुड़ती है। तब उस तिथि की महत्ता प्रतिष्ठित हो जाती है।

पन्द्रह (15)दिन (तिथि) का एक पक्ष, दो पक्ष का एक मास और चौबीस पक्ष का एक वर्ष यह क्रम निर्धारित है।

प्रत्येक तिथि किसी न किसी विशिष्ट-कालजयी महान आत्मा से संप्रक्त है। जैसे-रामनवमी, गुरुपूर्णिमा, बुद्धपूर्णिमा, महावीर जयंति=त्रयोदशी आदि।

अक्षय तृतीया जैन धर्म मतानुसार इस अवसर्पिणीकाल के प्रथम तीर्थंकर श्रमण ऋषभदेव परमात्मा से जुड़ी हुई है क्योंकि वैशाख शुक्ला तृतीया को परमात्मा के संयमी जीवन के प्रथम तप के प्रथम आहार ग्रहण से जुड़ी हुई है।

परमात्मा ऋषभदेव ने अपने संयम पथारोहण के बाद, एक वर्ष से भी अधिक समय तक निराहार निर्जलीय वार्षिक तपस्या का पारणा किया=तप पूर्ण किया था।

उन्हें प्रथम आहार मिला था-ईक्षुरस का।

अक्षय तृतीया और ईक्षुरस, ईक्षुरस और अक्षयतृतीया परस्पर एक दूसरे के पर्यायवाची हो गए।

ईक्षुरस, जिस वनस्पति के पौर-पौर मधुररस से परिपूर्ण होवे वह वनस्पति। जिसमें 3 गुणों की विशेष विशेषता होती है।-माधुर्यता, शीतलता और तृप्तियुक्त पौष्टिकता।

यह ईक्षु नामक वनस्पति हमें यह संदेश देती है कि मानव जीवन परस्पर माधुर्यगुण से परिपूर्ण हो, शीतल अर्थात परस्पर प्रेम वात्सल्य-करूणा और प्रशान्त भाव से संपन्न हो और जो प्राप्त है उसमें संतोष-आनंद-प्रसन्नता युक्त निर्लोभता भी हो।

परमात्मा का जीवन इन गुणों से तो परिपूर्ण था ही किन्तु ईक्षुरस को अपनी अंजुरी=अंजली में ग्रहण करके इसे और अधिक दिव्यता प्रदान कर दी। कैसे ?

अपने दोनों हाथों की आठों अँगुलियाँ और दोनों अंगुष्ठ, हथेलियों की परस्पर में एकता-संगठन स्थापित कर अंजुरी= अंजली का निर्माण किया ओर एक भी बूंद ईक्षुरस का पतित नहीं होने दिया। अर्थात अखंड ग्रहण किया।

परमात्मा का प्रथम आहारोत्सव हमें यह संदेश देता है कि हम अपने जीवन में, जीवन से जुड़े सभी आयामों =ईकाइयों में परस्पर सम्बद्ध रहेंगे तभी जीवन माधुर्य से भरेगा, चित्त शीतलता से प्रसन्न रहेगा और परिवार-संघ समाज और राष्ट्र तृप्त= परिपुष्ट होगा।

अखंडधारा को अखंड अंजली ही ग्रहण कर सकती है-खंडित नहीं। यदि एक भी छिद्र खुला रह गया तो अखंडता खंडित हुए बिना नहीं रहेगी। ऐसी परिस्थिति में जीवन का विकास नहीं, विनाश संभावित हो जाएगा।

परमात्मा अपने योगत्रय के सम्यक् उपयोगकर्ता थे अर्थात योगविजेता थे। इसलिए यह तृतीया अक्षय बन गई।

इसका द्वितीय पक्ष है-दानधर्म से। गतिमान अवसर्पिणीकाल में इसी दिन प्रथमतः दान प्रदान किया गया था-श्रेयांस राजकुमार द्वारा।

दानधर्म=त्यागधर्म। वस्तु का सर्वथाभावेन, सर्वथाप्रकारेण, निरपेक्ष या प्रशांत चित्त से, उल्लास और उदात्त भाव से जो उपलब्ध अवसर का सदुपयोग करते हुए त्याग=अर्पण=समर्पण करता है वह है त्यागरूप दानधर्म।

ऐसे दान का सुफल अक्षय होता है। अर्थात अनन्त आत्मानंद रूप अव्याबाध सुख की उपलब्धि है। वैसे भी दानधर्म, कभी अफल और निष्फल नहीं होता है।

परमात्मा की रत्नत्रयी साधना, त्रययोग की गुप्ति, तीनों अशुभकरणों से विमुक्तावस्था और फिर ईक्षुरस के त्रयगुणों का सम्मिलन इस तृतीया तिथि के साथ ऋषभदेव को भी अमरत्व प्रदान कर गया।

रत्नत्रय और ईक्षुरस, ईक्षुरस और रत्नत्रय दोनों परमात्मा के जीवन से सुशोभित हो उठे। अर्थात रत्नत्रय साधना-साधना में परमात्मा के लिए ईक्षुरस सबल सहायक हो गया।

प्रथम परमात्मा, प्रथम तप, प्रथम आहारदाता और प्रथम ग्रहण करता यह त्रिवेणी संगम अक्षय तृतीया कहलाई।

ज्योतिष गणना में भी अक्षय तृतीया वैशाख शुक्ला तृतीया कभी क्षय नहीं होती=की जाती है, यह विश्रुत परम्परा से जाना-माना जाता है।

यह पावन दिवस हमें भी अपने जीवन की पूर्णता-अखंडता का दिव्य संदेश देता है। खंड-खंड जीवन दुःखद और अखंड जीवन सुखद-परिपूर्ण जीवन कहलाता है। आओ हम इस पुनीत अवसर पर माधुर्यता-शीतलता और तृप्तियुक्त पौष्टिकता गुण से अपने जीवन को सुसम्पन्न बनाये।

दि. 11 मार्च 2023, शनिवार
समय-शाम 4 से 5 बजे
स्थान-नेमावर (दिगम्बर सिद्ध क्षेत्र)

मुनि प्रकाशचंद्र 'निर्भय'
(श्रमण संघीय प्रवर्तक)

रतलाम नेत्र शिविर में उमड़ा जनसैलाब

26 फरवरी 2023-श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के तत्वाधान में राजमल जी चोरडिया की पुण्यस्मृति में चंदन मल जी सुनील जी चोरडिया परिवार इंदौर द्वारा कॉन्फ्रेंस के चेयरमैन सुमित चोरडिया के तत्वाधान में श्री अरविंदो हॉस्पिटल इंदौर के सहयोग से विशाल निशुल्क नेत्र एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन सांगोद रोड स्थित जैन स्कूल परिसर काश्यप सभागृह में किया शिविर मे 945 मरीजों की जांच की तथा 50 मरीजों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए अरबिंदो अस्पताल इंदौर भेजा गया । अत्यधिक भीड़ होने के कारण रतलाम जिला अस्पताल के डॉक्टरो का बुलाया गया। शिविर में निःशुल्क 210 मरीजो ब्लड प्रेशर 175 मरीजों को शुगर एवं 150 मरीजों की किडनी की जांच भी निःशुल्क की गई व 235 मरीजों को चश्मे दिये गये। कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अध्यक्ष महेश जी डाकोलिया, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य संजय्जी नवलखा , प्रांतीय कोषाध्यक्ष मनोज मारू , म प्र चेयर मैन सुमित जी चौराडिया सहित रतलाम श्री संघ के अध्यक्ष ललित पटवा श्री सौभाग्य तीर्थ के अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी एवं संघरत्न इन्दरमल पटवा प्रखर वक्ता प्रकाश मूणत ने आतिथ्य सत्कार किया, संचालन रखब् जी चत्तर ने किया व आभार संदीप जी चोरडिया ने माना ।

११३वें संयमोत्सव दिवस : भाव विशुद्धि के कलाकार : जय गुरु सौभाग्य

सत्संग और सत्कर्मों से जो आत्मा पूर्वजन्मों में कहीं जुड़ा रहा होगा उसी आत्मा को वर्तमान मनुज जन्म में सुधर्म = सद्धर्म आचरण के लिए सहज रूप में अवसर उपलब्ध हो जाता है। सुधर्म=जिनशासन।

संसारस्थ आत्मा के सर्वोच्च पुण्य की यही पहचान है कि उसे जिनशासन जन्मजात विरासत में मिल जाता है। जो उसके उत्थान और कल्याण में परम सहयोगी-उपकारी बनता है।

पूज्य गुरुदेव श्रीमन्त सौभाग्यमलजी म. सा. ऐसे ही प्रबल पुण्यनिधि संपन्न थे।

20वीं सदी के महानायक, युगप्रधान सन्त शिरोमणि, यशस्वी युगपुरुष, धर्मदास सम्प्रदाय की मालवा शाखा के प्रवर्तक, गणावच्छेदक, गणाधिपति, श्रमणसंघ के निर्माण शिखर पुरुष-हृदय और विचारों में सामंजस्य बिठाने में महारथी, भागीरथी, पुरुषार्थ द्वारा परिवार-संघ और समाज को एकता के सूत्र में बाँधने वाले, अजातशत्रु, अवैरी-निर्वैरीभाव से संपन्न, सच्चे सन्तत्व भाव में जीने वाले-ऐसे ही उपदेशकर्ता, मालवकेसरी, महाराष्ट्र विभूषण, मालवा धरती के दिव्य रत्न, प्रसिद्ध वक्ता, प्रबल पुण्यधनी, प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेव जय गुरु सौभाग्य में रही ये विशेषता उनके भव्य व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रकाशित करती है। जो मानव जीवन के निर्माण और विकास में विश्वास रखते थे। और इसी के लिए उनका सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहा। निर्माण और विकास स्वयं के आत्मिक सद्गुणों का हो या पारिवारिक-सांघिक या सामाजिक क्षेत्र का हो, वे सर्वत्र यशस्वी बनें।

माँ केसर के अंगजात, पिता चौथमल के दुलारे, जय गुरु-नंदाचार्य कृष्ण की आँखों के सितारे और फाफरिया कुल तथा धर्म सम्प्रदाय के सर्वाधिक तेजस्वी नक्षत्र ने जीवन के 14वें बसन्तोत्सव में संयम पथारोहरण करके सन्त ही नहीं सन्तत्व की भव्य सुयात्रा प्रारंभ की थी जो 88वों वसन्त में जाकर पूर्ण हुई। स्व-पर कल्याणी साधक ने लाखों आत्माओं को दया-प्रेम-करूणा और वात्सल्यभाव से पूर्ण करने का अथक प्रयत्न किया। वे भाव विशुद्धि के कुशल कलाकार थे। और भव पाप ताप संताप के निवारक थे।

वैशाख वद तीज दि. 9 अप्रेल रविवार 2022 के पावन संयम जयंति के पुनीत अवसर पर हृदय/आत्मा की अनन्त आस्था के वंदन ! नमन!! अभिवादन ।।

10 मार्च शनिवार 2022
दिन में 2.30 से 3
स्थान हरदा (म. प्र.)

आपका लाडला सुशिष्य
मुनि प्रकाशचन्द्र निर्भय (प्रवर्तक)

वंदामि
नमंसामि

आराध्य देव सुगुणं तव चिन्तयामि।
पादौ त्वदीय मम चित्त समर्पयामि।
आध्यात्मवृत्ति सहितं ललितं प्रधानम्
सौभाग्य सद्गुरुवरं शिवदं नमामि।।

-दार्शनिक, डॉ. ललितप्रभाजी म. सा.

आदिनाथ संघ पूणा में त्रिदिवसीय फाल्गुनी चातुर्मास संपन्न

श्रमण संघीय श्री मालव केसरी पू. गुरुदेव श्री सौभाग्यमलजी म. सा., पू. प्र. श्री प्रकाशमुनिजी म. सा., गुरु माता श्री चाँदकुँवरजी म. सा., उप-प्रव. पू. श्री सुमनप्रभाजी म. सा., पू. श्री स्वर्णश्रीजी म. सा., पू. श्री देशनाजी म. सा., पू. श्री देवेन्द्रप्रभाजी म. सा., पू. श्री विभाश्री म. सा. के पावन सान्निध्य में श्री आनंदगुरु के कृपापात्र आदिनाथ संघ पूणा में फाल्गुनी चातुर्मास के अवसर पर त्रि दिवसीय कार्यक्रम विविध धार्मिक, सांस्कृति आयोजनों के साथ विशाल जन समुदाय के साथ सम्पन्न हुआ।

फाल्गुनी चातुर्मास के संदर्भ में पू. श्री सुमनप्रभाजी म. सा. ने कहा आगमों में आषाढ़ी, कार्तिकी और फाल्गुनी इन तीन प्रकार के चातुर्मास का उल्लेख आता है, इसमें व्यक्ति को विशेष रूप से धर्म आराधना, तप, जप, साधना आराधना करते हुए कर्म निर्जरा का लक्ष्य रखना चाहिए। होली पर्व पर भी हर इन्सान को कषायों के विकारों की, कर्मों की होली जलाकर आत्मा को परमात्मा बनाने का दिव्य संदेश देता है, रंग पंचमी घर परिवार, संघ समाज में प्रेम स्नेह का रंग बिखरे ना की दिव्य प्रेरणा देने आती है।

इस प्रसंग पर आदिनाथ संघ में, धनकवड़ी संघ पद्मावती नगर, बालाजी नगर, सुख सागर नगर, वड़गांव धायरी, शिवने, वारजे, सातववाड़ी, संज नर्सरी, कात्रज, राजगुरु नगर खेड़ आदि अनेक संघों के पदाधिकारी अपने संघ के साथ उपस्थित थे।

राजगुरु नगर खेड़ संघ के 2023 की आगामी 2023 की विनती को ध्यान में रखते हुए प्रवर्तक पू. श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. की ओर से स्वीकृति प्राप्त होने से राजगुरु नगर संघ में हर्षोल्लास व्याप्त हुआ। इस प्रसंग पर गौतम लब्धि फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिलजी नाहर ने जानकारी देते हुए कहा महिला दिवस के उपलक्ष में गौतम लब्धि फाउण्डेशन की ओर से एक हजार जरूरतमंद साधर्मिक को निःशुल्क जे. आर. एफ. कार्ड का वितरण विमलजी बाफना की ओर से किया जा रहा है।

(काव्यानंद) कैसे बोधि मिले?

डॉ. श्री ललितप्रभाजी म. सा.

कर्म पाश से बँधा हुआ मन, माया मोह छले
ज्ञान दीप पर पड़े आचरण, कैसे बोधि मिले?

इन्द्रिय सुख की तीव्र लालसा, गति कैसे सुधरे?
जहर बुझा मन भरे कुलांचे, मति कैसे निखरे?
शूल भरे पथरीले पथ में, दुःख आग उगले कर्म...

कभी राग के रंग बिखरते, द्वेष करे हलचल
गाढ़ी कालिख जमी चित्त पर, कैसे रहे कुशल?
दूर-दूर भागे सन्तों से, फिर कैसे सँभले?कर्म...

देह वचन पर अनुशासन रख, बौराया घूमे
पर परिणति में खोया-खोया, पग-पग पर झूमे
ध्यान योग के प्रशस्त पथ पर, बेर-बेर फिसले कर्म...

चपल चित्त की गति को कोई, साध सके ज्ञानी
मन के प्रवाह को धीरे से, मोड़ सके ध्यानी
ललित स्वस्थ चिन्तन से मन के, भाव त्वरित बदले

****

आशा तृष्णा बाढ़ में, डूब रहा संसार
अज्ञानी रोते रहे, ज्ञानी पहुँचे पार

*

माया ठगिनी है बड़ी, छुप-छुप खेले दाँव
इसके चक्कर में पड़े, डूबे जीवन नाव

*

माया का चाकर बना, घूमे तीनों लोक
पछतावा बाकी रहा, पल्ले बाँधा शोक

****

फाल्गुनी चातुर्मास के अवसर पर पू. श्री सुमनप्रभाजी म. सा. के आशीर्वाद से तथा पू. स्वर्णश्रीजी म. सा. के प्रेरणा से स्थापित आदिनाथ महिला मंडल का शपथ विधि के साथ गठन किया गया। आदिनाथ संघ की ओर से उपस्थित सभी संघों का तथा धर्मसभा का आभार व्यक्त विजयजी नवलखा ने किया।

सौभाग्य तीर्थ पत्रिका का विवरण फार्म 8 के अनुसार

1. प्रकाशन स्थान : खाचरौद
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक : कला श्री प्रिंटर्स, जवाहर मार्ग नागदा जं., जि-उज्जैन (म. प्र.)
4. प्रकाशक का नाम : रवि जैन
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : रवि जैन 30 विक्रम मार्ग, खाचरौद, जिला-उज्जैन
5. संपादक का नाम : रवि जैन
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : रवि जैन 30 विक्रम मार्ग, खाचरौद, जिला-उज्जैन
6. उन व्यक्तियों का नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है। : रवि जैन 30 विक्रम मार्ग, खाचरौद, जिला-उज्जैन

मैं रवि जैन घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च - 2023 - हस्ताक्षर : रवि जैन
स्वामी एवं प्रकाशक

वर्तमान पता : 303 अंकित अपार्टमेंट, 12-13 प्रभु नगर राजेन्द्रनगर, चाणक्यपुरी चौराहा

विशिष्ट-पर्व-तिथि

पक्खी पर्व

वैशाखवद 30 गुरु 20 अप्रेल
वैशाख सुद- 15 शुक्र 5 मई

पुष्य नक्षत्र दि. 28 अप्रेल 2023 शुक्रवार

अक्षय तृतीया-23 अप्रेल 2023 रविवार

पावन स्मरण ! वंदन! नमन!

1. मालव केसरी, प्रसिद्धवक्ता, प्रवर्तक, गणाधिपति श्री सौभाग्यमलजी म. सा. की 113वीं दीक्षा जयंति वैशाख वदि 3 दि. 9 अप्रेल रविवार,
2. जय गुरु श्री सौभाग्य के सुशिष्य ललित लिपीकार पं. श्री नगीनमुनि म. सा. 92 वीं दीक्षाजयंति वै. व. एकम
3. जैनाचार्य श्री नंदलालजी म. सा.
4. जैनाचार्य श्री माधवमुनिजी म. सा.
5. जैनाचार्य श्री चंपालालजी म. सा.

140वीं दीक्षा जयंति अक्षय तृतीया

6. प्रवर्तक श्री सूर्यमुनिजी म. सा. जन्म जयंति वैशाख . पूनम

हर्ष : बधाई : अभिनंदन

1. अध्ययनशीला श्री गोयमसुधाजी म. सा.
   8वाँ दीक्षा दिन-चैत्रसुद 13
2. मधुर वक्ता-गायिक श्री चंदनबालाजी म. सा.
   69वाँ जन्मदिन-4 अप्रेल
3. मधुर गायिका श्री महिमाजी म. सा.
   41वाँ जन्मदिन-10 अप्रेल

इस अंक के प्रायोजक

श्रीमती मधुबाला दिलीपकुमारजी गंग के वर्षीतप के निमित्त श्री अश्विन एवं श्री आयुष गंग रतलाम (म. प्र.)

सह सम्पादक सहयोगी
1. श्री अभिनंदन नागसेठिया-नासिक
2. श्री अनुज लोढा-उज्जैन

सौभाग्य तीर्थ पत्रिका संबंधित सूचना-पत्र व्यवहार
श्री आशीष वी. गुंदेचा - 9009855598
29, उषा नगर एक्स, मु.पो.इन्दौर (म.प्र.)

RNI No. MPHIN/2016/70554
Postal Regn. मालवा डिवीजन/357/2023-25
Date of Posting 02 of every month

स्वामी एवं प्रकाशक : रवि जैन, 30 विक्रम मार्ग, खाचरौद
मुद्रक - राजेश चोपड़ा द्वारा कलाश्री प्रिन्टर्स, जवाहर मार्ग, नागदा जंक्शन जिला-उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं रवि जैन, 30 विक्रम मार्ग, खाचरौद जिला-उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक - रवि जैन 9009279906 Email - ravi.jain-773@gmail.com
न्याय क्षेत्र - खाचरौद। प्रकाशित मेटर में सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

सेवा में,